ईदगाह

पाठ 11

—प्रेमचन्द

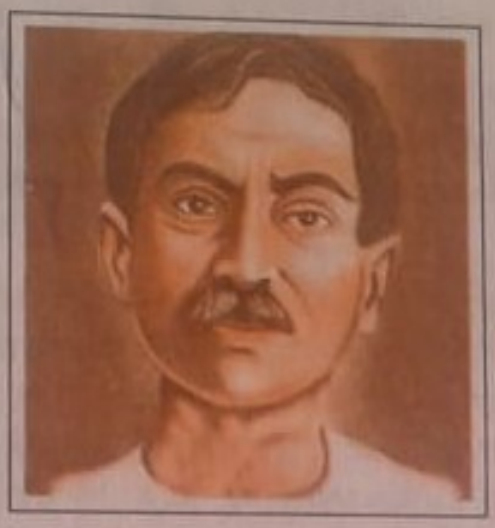

1. रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद ईद आई है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है। (पृष्ठ सं. 40)

शब्दार्थ—रमजान = मुस्लिम कैलेंडर के एक महीने का नाम। रोजा = व्रत (उपवास)। रौनक = शोभा। अजीब = अनोखी।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'ईदगाह' शीर्षक कहानी से उद्धृत है। इसके लेखक कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचन्द हैं। लेखक कहते हैं कि ईद मुस्लिमों का एक बड़ा त्योहार है। उस समय लोगों का मन प्रसन्नता और उत्साह से भरा होता है। मन में प्रसन्नता होने के कारण प्रकृति भी उल्लासमय प्रतीत होती है।

व्याख्या—ईद के त्योहार के आने पर इस्लाम धर्म को मानने वालों की प्रसन्नता का वर्णन करते हुए लेखक कहते हैं कि ईद का त्योहार रमजान के पूरे तीस रोजों (उपवास) के बाद आया है। चारों ओर त्योहार की प्रसन्नता व्याप्त है। आज का सवेरा लोगों को अधिक मनोहर एवं सुहावना लग रहा है। पेड़ों पर कुछ नए ढंग की हरियाली दिख रही है और खेतों की शोभा भी आज अनोखी ही है। आकाश में एक विचित्र-सा लाल रंग छा गया है। प्रकृति में सर्वत्र हँसी-खुशी छा रही है। आज का सूरज भी और दिनों की अपेक्षा अधिक प्यारा और शीतल लग रहा है। मानो सबको ईद की बधाई दे रहा हो।

विशेष—1. प्रेमचन्द की कहानियाँ मानव-मन की भावनाओं को कुशलता से व्यक्त करती हैं। 2. त्योहार का उत्साह बच्चों में साफ दिख रहा है। हृदय की प्रसन्नता ही जैसे वातावरण को मनोहर और आकर्षक बना रही है। 3. प्रेमचंद की भाषा में उर्दू के प्रचलित शब्दों का प्रयोग प्रचुरता से हुआ है। वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। 4. मन के भाव जैसे होते हैं, प्रकृति हमें वैसी ही लगती है।

2. लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोजा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं; लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज है। रोजे बड़े-बूढ़ों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज ईद का नाम रटते थे आज

वह आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते? इन्हें गृहस्थी की चिंताओं से क्या प्रयोजन! सेवैयाँ [illegible] दूध और शक्कर घर में है या नहीं, इनकी बला से, ये तो सेवैयाँ खाएँगे। वह क्या जाने कि अब्बाजान क्यों [illegible] कायमअली के घर दौड़े जा रहे हैं। उन्हें क्या खबर कि चौधरी आज आँखें बदल लें, तो यह सारी ईद मुहर्रम [illegible]

शब्दार्थ—ईदगाह = जहाँ ईद की सामूहिक नमाज पढ़ी जाती है। प्रयोजन = मतलब। अब्बाजान = पिता। [illegible] = घबराए हुए। आँखें बदलना = मुहावरा, अर्थ है—व्यवहार में परिवर्तन आना। मुहर्रम = मातम का त्योहार (यह शब्द [illegible] का विरोधी है क्योंकि ईद खुशियों का त्योहार है)।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्य-पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित मुंशी प्रेमचन्द की प्रसिद्ध [illegible] 'ईदगाह' से ली गई हैं। ईद के त्योहार पर पूरे गाँव में हलचल हो रही है। लोग ईदगाह जाकर नमाज पढ़ने की तैयारी में [illegible] हैं। ईदगाह शहर में है और गाँव से तीन कोस दूर है। वहाँ तक पैदल जाना है। इसलिए सभी ग्रामीण रोजेदार अपने काम [illegible] निबटाने में लगे हैं।

व्याख्या—लेखक कहते हैं कि ईद के अवसर पर सबसे अधिक खुशी लड़कों को हो रही है। इनमें से कुछ ने [illegible] दिन ही रोजा रखा है। वह भी पूरा नहीं, बस दोपहर तक। ज्यादातर बच्चों ने रोजा रखा ही नहीं है परन्तु उनकी प्रसन्नता का [illegible] रोजे रखने या न रखने से नहीं है। उनकी खुशी का कारण तो ईद का त्योहार है। ईदगाह जाने की उनको भी खुशी है। रोजा [illegible] बड़े-बूढ़ों का काम है। लेकिन ईद का त्योहार तो बच्चों के लिए प्रसन्नता देने वाला है। वे हर दिन ईद की बात करते थे। [illegible] आयेगी ईद? अब उनकी प्रतीक्षा समाप्त हुई है। ईद का त्योहार आ गया है। अब उनको ईदगाह जाने की जल्दी है। वे [illegible] जल्दी ईदगाह न चलने से बेचैन हो रहे हैं। बड़ों को घर-गृहस्थी की चिन्ता है। बच्चों को इससे क्या मतलब? ईद पर [illegible] पकानी हैं। इसके लिए दूध और शक्कर का इंतजाम करना है। यह बड़ों की चिन्ता है। बच्चों को इससे कोई मतलब नहीं। उन्हें तो सेवैयाँ खानी हैं। बच्चों के पिता चौधरी कायमअली के घर कुछ परेशान होकर दौड़े गये हैं। वह उनसे ईद के त्योहार को [illegible] के लिए कुछ रुपये उधार माँगने गये हैं, नहीं तो ईद कैसे मनेगी? यदि चौधरी रुपया उधार नहीं देंगे तो ईद के त्योहार को [illegible] मुहर्रम के मातम में बदल जायेगी। सारा त्योहार फीका हो जायेगा। बच्चे इस बात को नहीं जानते।

विशेष—1. ईद के अवसर पर बच्चों की प्रसन्नता और ईदगाह जल्दी जाने की बेचैनी का वर्णन है। 2. लेखक ने ग्रामीणों की निर्धनता की ओर संकेत किया है। 3. भाषा सरल और सुबोध है। उसमें प्रवाह है। मुहावरों और उर्दू शब्दों के प्रयोग ने उसको प्रभावशाली बनाया है। 4. शैली वर्णनात्मक-विवरणात्मक है।

3. आशा तो बड़ी चीज है, और फिर बच्चों की आशा! उनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी-धुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है, फिर भी वह प्रसन्न है। जब उसके अब्बाजान रुपये और अम्मीजान नियामतें लेकर आएँगी, तो वह दिल के अरमान निकाल लेगा।

शब्दार्थ—राई का पर्वत बनाना = मुहावरा, छोटी बात को बड़ा बना देना। नियामतें = आशीर्वाद। अम्मीजान = माता। दिल के अरमान निकालना = मुहावरा, इच्छाएँ पूरी करना।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित प्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचन्द की 'ईदगाह' शीर्षक कहानी से लिया गया है। ईदगाह कहानी का नायक बालक हामिद है। उसके माता-पिता जीवित नहीं हैं। वह अपनी दादी अमीना के साथ रहता है। उसे बताया गया है कि उसके माता-पिता अल्लाह से उसके लिए अच्छी-अच्छी चीजें लेने गये हैं। हामिद को आशा है कि उनके लौटने पर उसके सब कष्ट दूर हो जायेंगे।

व्याख्या—लेखक कहते हैं कि आशा मनुष्य के मन की महत्वपूर्ण भावना है। उसके बल पर वह कष्टपूर्ण जीवन [illegible] काट लेता है। बच्चों के मन में आशा की भावना और ज्यादा महत्व की चीज होती है। बच्चे कल्पनाशील होते हैं। वे [illegible] कल्पना के सहारे बड़ी-बड़ी बातें सोच लेते हैं। हामिद के माता-पिता नहीं हैं। आमदनी का कोई जरिया न होने से वह [illegible]

पैरों में पहनने के लिए जूते नहीं हैं। सिर पर एक टोपी है, वह भी पुरानी है। उस पर लगा हुआ गोटा पुराना है और उसकी चमक नष्ट हो चुकी है। परन्तु हामिद खुश है। उसको आशा है कि ये परेशानियाँ जल्दी ही दूर हो जायेंगी। जब उसके पिता लौटेंगे तो उनके पास उनकी कमाई का थैलियों में भरा धन होगा। उसकी माता भी भगवान के आशीर्वाद के रूप में अनेक चीजें लेकर वापस आयेंगी। तब उसके पास किसी चीज की कमी नहीं होगी और उसकी सभी इच्छायें पूरी हो जायेंगी।

विशेष—1. आशा की भावना का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व होता है। बच्चे अपनी कल्पना से आशा को और अधिक प्रबल बना देते हैं। 2. हामिद के माता-पिता मर चुके हैं परन्तु उसको यह बात बताई नहीं गई है। दादी की बात के आधार पर ही उसने कल्पना की आशा का पहाड़ खड़ा कर लिया है। 3. भाषा सरल, सुबोध, प्रवाहपूर्ण और मुहावरेदार है। उसमें उर्दू शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। 4. शैली विवरणात्मक है।

4. अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं! आज आबिद होता तो क्या इसी तरह ईद आती और चली जाती! इस अंधकार और निराशा में वह डूबी जा रही थी। किसने बुलाया था इस निगोड़ी ईद को? इस घर में उसका काम नहीं; लेकिन हामिद! उसे किसी के मरने-जीने से क्या मतलब? उसके अंदर प्रकाश है, बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दल-बल लेकर आए, हामिद की आनंद भरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी। (पृष्ठ सं. 41)

शब्दार्थ—निगोड़ी = अभागी (ब्रज क्षेत्र में प्रचलित एक गाली, जिसका कोई न हो उसे निगोड़ा या निगोड़ी कहते हैं)। विध्वंस = विनाश।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'ईदगाह' शीर्षक कहानी से लिया गया है। इसके लेखक प्रसिद्ध कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द हैं। हामिद के माता-पिता जीवित नहीं हैं। वह अपनी बूढ़ी दादी अमीना के साथ रहता है। अमीना गरीब है। घर में कोई कमाने वाला नहीं है। ईद का त्योहार आ गया है। इससे अमीना की चिन्ता और बेचैनी बढ़ गई है। वह सोच रही है कि पैसे के अभाव में वह ईद का त्योहार कैसे मनायेगी?

व्याख्या—लेखक ने कहा है कि अमीना अपने दुर्भाग्य पर अपनी कोठरी में बैठकर आँसू बहा रही है। ईद का त्योहार आ गया है और उसके घर में अनाज का एक दाना भी नहीं है। ऐसे में वह त्योहार कैसे मनायेगी? यदि आज उसका पुत्र आबिद जिन्दा होता तो ईद के आने पर उसको ऐसी चिन्ता न होती। बिना हर्ष-उल्लास के ईद आती और चली नहीं जाती। आबिद सब इंतजाम करता और वह खुशी से ईद मनाती। उसको ऐसी निराशा और अँधेरेपन का सामना न करना पड़ता। वह बहुत व्याकुल और निराश थी। कहीं से किसी सहारे की उम्मीद नहीं थी। उसके मन में घना अँधेरा छाया था। वह व्याकुलतापूर्वक सोच रही थी कि इस ईद को उसने तो बुलाया नहीं था। उसके घर में ईद आई ही क्यों? यहाँ उसकी क्या जरूरत थी? अमीना की सोच से हामिद को कोई मतलब नहीं था। जहाँ अमीना निराश और दुखी थी वहीं दूसरी ओर हामिद खुश था। उसको अमीना की चिन्ता और व्याकुलता से मतलब नहीं था। उसका मन आशा से भरा था और उसमें प्रसन्नता और उल्लास की रोशनी छाई हुई थी। उसका मन ईद के आने पर खुशी से भर उठा था। कितनी ही बड़ी आफत क्यों न आए, हामिद के मन की प्रसन्नता और आशा उसको नष्ट करने की सामर्थ्य रखती थी।

विशेष—1. भाषा सरल प्रवाहपूर्ण एवं सुबोध है। उर्दू तथा लोकजीवन के (जैसे निगोड़ी) शब्दों के प्रयोग ने उसको प्रभावशाली बनाया है। 2. शैली विचारात्मक और मनोविश्लेषणात्मक है। 3. अमीना के मन की निराशा और व्याकुलता का प्रभावशाली चित्रण हुआ है। ईद का त्योहार और निर्धनता उसकी बेचैनी का कारण है। 4. दूसरी ओर हामिद है। वह अभी बच्चा है। ईद के अवसर पर उसका मन आशा और उल्लास से भरा है।

5. उस अठन्नी को ईमान की तरह बचाती चली आती थी इसी ईद के लिए, लेकिन कल ग्वालन सिर पर सवार हो गई तो क्या करती! हामिद के लिए कुछ नहीं है, तो दो पैसे का दूध तो चाहिए ही। अब तो कुल दो आने पैसे बच रहे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में, पाँच अमीना के बटुवे में। यही तो बिसात है और ईद का त्योहार, अल्लाह ही बेड़ा पार लगाए। सभी को सेवैयाँ चाहिए और थोड़ा किसी की आँखों नहीं लगता। किस-किस से मुँह चुराएगी। और मुँह क्यों चुराए? साल-भर का त्योहार है। जिंदगी खैरियत से रहे, उनकी तकदीर भी तो उसी के साथ है। बच्चे को खुदा सलामत रखें, ये दिन भी कट जाएँगे। (पृष्ठ सं. 41)

शब्दार्थ—ईमान की तरह बचाना = बहुत सँभालकर रखना। ग्वालन = दूध वाली। सिर पर सवार होना = मुहावरा, बार-बार तगादा करना, कड़ाई से माँगना। बिसात = सामर्थ्य (ताकत)। बेड़ा पार लगाना = मुहावरा, मुसीबत से पार पाना। आँख नहीं लगना = पसंद नहीं आना। मुँह चुराएगी = मुँह छिपाना (देने से मना कर देना)। खैरियत = राजी-खुशी। तकदीर = भाग्य। सलामत रखना = कुशलता से रखे।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियाँ 'ईदगाह' नामक कहानी से ली गई हैं जो हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित है। इस कहानी के लेखक कथा-सम्राट् मुंशी प्रेमचंद हैं। हामिद की दादी अमीना एक गरीब महिला थी। आज ईद पर उसे इस बात की चिंता थी कि त्योहार का खर्च कहाँ से आएगा? उसके पास कुल दो आने (आठ पैसे) थे, जिनमें से तीन पैसे उसने ईद के मेले पर खर्च करने हेतु हामिद को दे दिए थे और पाँच पैसे से वह ईद पर बनने वाली सेवइयों का जुगाड़ कर रही थी। उसकी इसी गरीबी और विवशता का चित्रण प्रेमचंद ने इस अवतरण में किया है।

व्याख्या—अमीना का इकलौता पुत्र आबिद पिछले वर्ष हैजे की बीमारी के कारण चल बसा था। अतः अपने पोते हामिद का पालन-पोषण वह इधर-उधर सिलाई करके उससे मिले पैसों से करती थी। उस दिन फहीमन के कपड़े सिलने से आठ आने सिलाई के मिले थे जिन्हें वह ईद का त्योहार हेतु सहेजकर रखे हुए थी। किन्तु कल दूध देने वाली ग्वालन अपने पैसे के लिए तगादा करने लगी तो उसका हिसाब करना पड़ा। उस अठन्नी को अमीना बड़ी सावधानी से बचाकर रखे थी, किन्तु अब ग्वालन को देने के बाद उसके पास केवल दो आने शेष बचे थे जिनमें से तीन पैसे उसने हामिद को ईद के मेले हेतु दे दिए थे और शेष बचे पाँच पैसों से वह सेवइयों का जुगाड़ कर रही थी। कैसे होगा सब, अब तो अल्लाह (ईश्वर) का ही भरोसा है, वही बेड़ा पार लगाएगा। त्योहार पर सभी कामवालियों को सेवइयाँ देनी पड़ेंगी चाहे वह धोबिन हो या नाइन, जमादारिन हो या चूड़ीवाली (मनिहारिन)। थोड़ी सेवइयों से इनका काम न चलेगा, मुँह फुला लेंगी और फिर त्योहार रोज थोड़े ही आते हैं। ये बेचारी भी तो त्योहार पर आश लगाए रहती हैं। रोज थोड़े ही आता है त्योहार। इनकी तकदीर भी तो उसी के साथ बँधी है। मेरा पोता खैरियत से रहे, भगवान् उसे सही-सलामत रखे, गरीबी के ये दिन भी कट ही जाएँगे।

विशेष—1. ईद के त्योहार के आने पर निर्धन अमीना की चिन्ता का सजीव वर्णन हुआ है। 2. त्योहार भी निर्धन लोगों के लिए आनन्ददायक नहीं होते। उस समय भी पीड़ा और चिन्ता उनका पीछा नहीं छोड़ती। 3. प्रेमचन्द को गरीबों के पीड़ा भरे जीवन का गहन ज्ञान है। यह इस वर्णन से स्पष्ट होता है। 4. भाषा विषयानुकूल, प्रवाहपूर्ण और मुहावरेदार है। 5. मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

6. मोहसिन ने प्रतिवाद किया— यह कानिसटिबिल पहरा देते हैं। तभी तुम बहुत जानते हो। अजी हजरत, यही चोरी कराते हैं। शहर के जितने चोर-डाकू हैं, सब इनसे मिले रहते हैं। रात को ये लोग चोरों से तो कहते हैं, चोरी करो और आप दूसरे मुहल्ले में जाकर "जागते रहो! जागते रहो!" पुकारते हैं। जभी इन लोगों के पास इतने रुपये आते हैं। मेरे मामूँ एक थाने में कानिसटिबिल हैं। बीस रुपया महीना पाते हैं; लेकिन पचास रुपये घर भेजते हैं। अल्ला कसम! मैंने एक बार पूछा था कि मामूँ आप इतने रुपये कहाँ से पाते हैं? हँसकर कहने लगे—बेटा, अल्लाह देता है। फिर आप ही बोले—हम लोग चाहें तो एक दिन में लाखों मार लाएँ। हम तो इतना ही लेते हैं, जिसमें अपनी बदनामी न हो और नौकरी न चली जाए! (पृष्ठ सं. 43)

शब्दार्थ—कानिसटिबिल = सिपाही। कवायद = ड्रिल, परेड। प्रतिवाद करना = विरोध करना। हजरत = महोदय।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्य-पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक की 'ईदगाह' नामक कहानी से ली गई हैं। यह कहानी कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने लिखी है। शहर में बच्चों को 'पुलिस लाइन' की इमारत दिखाई पड़ी। बच्चे वार्तालाप कर रहे थे कि यहाँ कांस्टेबिल (सिपाही) ड्रिल करते हैं और रात को पहरा देते हैं, जिससे चोरियाँ न हों। तब मोहसिन ने विरोध करते हुए कहा कि ये सिपाही ही तो चोरों से मिल-जुलकर चोरियाँ करवाते हैं और दूसरे मुहल्ले में जाकर 'जागते रहो, जागते रहो' पुकारते हैं।

व्याख्या—मोहसिन ने इस बात का विरोध किया कि सिपाही रात को पहरा देकर चोरियाँ रोकते हैं। उसने अपने ज्ञान का प्रदर्शन करते हुए और हामिद एवं अन्य बच्चों को मूर्ख साबित करते हुए कहा—अजी यही लोग तो चोरी करवाते हैं। शहर के सारे चोर-डाकू पुलिस वालों से मिले रहते हैं और इनकी मिलीभगत से ही चोरियाँ होती हैं। रात को चोरों से तो कहते हैं चोरी करो और खुद दूसरे मोहल्लों में जाकर जागते रहो-जागते रहो कहकर पहरा देते हैं। चोरी में मिले माल में इनका हिस्सा भी होता है, तभी तो इन सिपाहियों के पास ढेर सारे रुपये आते रहते हैं। मोहसिन ने बताया कि उसके मामूँ एक थाने में सिपाही हैं। उनका वेतन तो बीस रुपये मासिक है परन्तु वह घर पर हर माह पचास रुपये भेजते हैं। साथी बच्चों को अपनी बात का विश्वास दिलाने के लिए मोहसिन ने अल्लाह की कसम खाकर कहा कि उसने अपने मामूँ से पूछा था कि उनको इतने रुपये कहाँ से मिलते हैं। उन्होंने हँसकर बताया था कि सब अल्लाह देता है। फिर खुद ही आगे बताया कि वह तो एक दिन में लाखों जमा लें परन्तु वह इतना ही रुपया रिश्वत में लेते हैं कि उनकी बदनामी न हो और नौकरी पर संकट न आये।

विशेष—1. प्रेमचंद ने पुलिसवालों की प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है। समाज के लोग इनके बारे में क्या सोचते हैं; यह बच्चों की बातों से पता चलता है। 2. मोहसिन की जानकारी उसके व्यक्तिगत अनुभव से जुड़ी है। उसके मामूँ सिपाही हैं। वेतन बीस रुपया है, पर हर महीने पचास रुपये घर भेजा करते हैं। 3. इस प्रकार यथार्थ का चित्रण करते हुए भी प्रेमचंद ने उसमें आदर्श का समावेश कर दिया है। इसे आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद कहते हैं। 4. भाषा में उर्दू शब्दों की बहुलता है। शैली विवरणात्मक है।

7. कितना सुंदर संचालन है, कितनी सुंदर व्यवस्था! लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं, फिर सब-के-सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं, और एक साथ घुटनों के बल बैठ जाते हैं। कई बार यही क्रिया होती है, जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जाएँ और यही क्रम चलता रहा। कितना अपूर्व दृश्य था, जिसकी सामूहिक क्रियाएँ, विस्तार और अनंतता हृदय को श्रद्धा, गर्व और आत्मानंद से भर देती थीं, मानो भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए है। (पृष्ठ सं. 44)

शब्दार्थ—सिजदे में झुकना = खुदा के आगे माथा झुकाना। प्रदीप्त होना = जल उठना। आत्मानंद = आन्तरिक प्रसन्नता। भ्रातृत्व = भाईचारा। एक लड़ी में पिरोना = एकता के बंधन में बाँधना।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'ईदगाह' शीर्षक कहानी से लिया गया है। इसके लेखक प्रसिद्ध कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द हैं। ग्रामीण जन ईदगाह पहुँचते हैं। वहाँ ईद की नमाज अदा करने की व्यवस्था की गई है। नमाजी कतारों में खड़े हैं। जो बाद में आता है वह पीछे खड़ा हो जाता है। यहाँ धन और पद का महत्व नहीं है। इस्लाम की नजर में सभी बराबर हैं। यहाँ होने वाली सामूहिक नमाज सभी को भाईचारे के एक सूत्र में बाँधती है।

व्याख्या—ईदगाह में पढ़ी जाने वाली सामूहिक नमाज की संचालन व्यवस्था बहुत सुन्दर और अनुशासित है। लाखों सिर एक साथ खुदा की इबादत में झुक जाते हैं और फिर सब लोग एक साथ खड़े हो जाते हैं। एक साथ झुकते हैं और फिर सभी लोग घुटनों के बल बैठ जाते हैं। बार-बार यही क्रिया दुहराई जाती है, जिसे देखकर ऐसा लगता है जैसे बिजली के लाखों बल्ब एक साथ जल-बुझ रहे हों और यह क्रम निरन्तर जारी हो। इस अपूर्व दृश्य को और इन सामूहिक क्रियाओं को इतने बड़े स्तर पर देखकर देखने वाले के हृदय में श्रद्धा, गर्व और आनन्द के भाव भर जाते हैं। ऐसा लगता है जैसे लाखों लोग पारस्परिक भाईचारे के भाव से एक सूत्र में बँधे हों। जहाँ छोटे-बड़े और अमीर-गरीब का कोई भेद न हो।

विशेष—1. ईद की नमाज का दृश्य यहाँ लेखक ने साकार कर दिया है। 2. इस्लाम में पारस्परिक भ्रातृत्व की भावना का मूल कारण यही सामूहिक इबादत है। 3. भाषा में उर्दू के शब्दों की बहुलता है। 4. प्रस्तुतीकरण की शैली वर्णनात्मक है।

8. कितने सुन्दर खिलौने हैं। अब बोलना ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है, खाकी वर्दी और लाल पगड़ीवाला, कंधे पर बंदूक रखे हुए; मालूम होता है अभी कवायद किए चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर झुकी हुई है, ऊपर मशक रखे हुए है। मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए हैं। कितना प्रसन्न है। शायद कोई गीत गा रहा है। बस, मशक से पानी उँड़ेला ही चाहता है। नूरे को वकील से प्रेम है। कैसी विद्वता है उसके मुख पर! काला चोगा, नीचे सफेद अचकन, अचकन के सामने की जेब

में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किए चले आ रहे हैं। (पृष्ठ सं. 44)

शब्दार्थ—भिश्ती = पानी छिड़कने वाला। मशक = चमड़े का बड़ा थैला जिसमें पानी भरा जाता है। विद्वता = बुद्धिमानी। अचकन = अंगरखा। पोथा = मोटी पुस्तक। जिरह = तर्क।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'ईदगाह' शीर्षक कहानी से लिया गया है। सामूहिक नमाज के पश्चात बच्चों ने मेले का आनन्द लिया। वे चर्खियों पर झूलने पहुँचे। वहाँ से वे खिलौनों की दुकान पर पहुँचे। दुकान में मिट्टी के तरह-तरह के खिलौने सजे हुए थे। दुकान में खिलौनों की कतारें लगी थीं। उनमें सिपाही, गुजरिया, राजा, वकील, भिश्ती, धोबिन आदि तरह-तरह के खिलौने थे।

व्याख्या—लेखक कहते हैं कि दुकान में रखे खिलौने अत्यन्त सुन्दर थे। वे जीवित-से लग रहे थे। जैसे अभी बोलना ही चाहते हों। महमूद ने सिपाही खरीदा। वह खाकी रंग की वर्दी पहने था तथा उसके सिर पर लाल पगड़ी थी। उसके कंधे पर बन्दूक रखी थी। ऐसा लग रहा था कि वह अभी-अभी कवायद करके आया हो। मोहसिन को भिश्ती अच्छा लगा। उसने वही खरीदा। उसकी झुकी कमर पर मशक लदी थी। उसने एक हाथ से मशक के मुँह को पकड़ रखा था। वह अत्यन्त खुश लग रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे कोई गीत गा रहा हो। लग रहा था कि वह अपनी मशक से पानी जमीन पर गिराना चाहता है। एक खिलौना वकील था। नूरे का वकील से प्यार था। उसके चेहरे पर विद्वता झलक रही थी। उसने काले चोगे के नीचे सफेद रंग की अचकन पहन रखी थी। अचकन की जेब में घड़ी थी, जो सुनहरी जंजीर से बँधी थी। उसके एक हाथ में कानून की मोटी किताब थी। खिलौना जीता-जागता वकील ही लग रहा था। उसे देखकर ऐसा लगता था जैसे कोई वकील न्यायालय में किसी मुकदमे में बहस करके आ रहा हो।

विशेष—1. ईदगाह के मैदान में सजी हुई खिलौनों की दुकान का सजीव चित्रण हुआ है। 2. बाल-मनोविज्ञान के अनुसार बताया गया है कि बच्चों का खिलौनों की ओर स्वाभाविक आकर्षण होता है। 3. वर्णनात्मक शैली का सफल प्रयोग हुआ है।

9. हामिद खिलौनों की निंदा करता है— मिट्टी ही के तो हैं, गिरे तो चकनाचूर हो जाएँ; लेकिन ललचाई हुई आँखों से खिलौनों को देख रहा है। और चाहता है कि जरा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता। उसके हाथ अनायास ही लपकते हैं; लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते हैं, विशेषकर जब अभी नया शौक है। हामिद ललचाता रह जाता है। (पृष्ठ सं. 45)

शब्दार्थ—अनायास = बिना प्रयास किए (अचानक)

सन्दर्भ तथा प्रसंग—उपर्युक्त गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित मुंशी प्रेमचन्द की प्रसिद्ध कहानी 'ईदगाह' से लिया गया है। लड़के खिलौनों की दुकान पर धावा बोलते हैं। महमूद, मोहसिन, नूरे आदि सभी कोई न कोई खिलौना खरीदते हैं। खिलौने अत्यन्त आकर्षक तथा सुंदर हैं। हामिद के पास तीन ही पैसे हैं। वह खिलौने देखकर ललचाता है परन्तु खरीदता नहीं।

व्याख्या—हामिद के साथी बालकों ने खिलौनों की दुकान से मिट्टी के बने आकर्षक खिलौने खरीदे पर हामिद उन्हें कैसे खरीद सकता था, उसके पास कुल मिलाकर तीन ही पैसे तो थे। अतः वह उन खिलौनों की निंदा करके अपने मन को समझा रहा था कि ये मिट्टी के बने खिलौने हैं, गिरे तो चकनाचूर हो जाएँगे किन्तु वह ललचाई नज़रों से खिलौनों की ओर देखता और चाहता है कि थोड़ी देर के लिए वे खिलौने उसके हाथ में आ जाएँ और वह उन्हें छूकर और देखकर तृप्त हो जाए। काश, ये खिलौने उसके हाथ में आ जाते, पर बच्चे इतनी त्यागवृत्ति वाले नहीं होते कि अपना खिलौना दूसरों को छूने भी दें। अभी तो उनका ही शौक पूरा नहीं हुआ, खिलौना लाए देर ही कितनी हुई थी। फिर भला अपना खिलौना हामिद को कैसे दे देंगे, बेचारा हामिद ललचाई नजरों से उन खिलौनों को देखता था और मन को समझाने के लिए खिलौनों की निंदा कर रहा था।

विशेष—1. प्रेमचंद ने बाल मनोविज्ञान का सुन्दर चित्रण इस अवतरण में किया है। जब हामिद को खिलौने नहीं मिलते तो मन समझाने के लिए वह खिलौनों की निंदा करने लगता है। 2. खिलौनों के प्रति बच्चों के मन में स्वाभाविक आकर्षण होता

है। 3. भाषा में उर्दू के शब्दों के साथ-साथ संस्कृत के शब्द (यथा-अनायास) भी प्रयुक्त हुए हैं। 4. वर्णनात्मक शैली प्रयुक्त है।

10. उसे खयाल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है; अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी! फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज हो जाएगी। खिलौने से क्या फायदा। व्यर्थ में पैसे खराब होते हैं। जरा देर ही तो खुशी होती है। फिर तो खिलौने को कोई आँख उठाकर नहीं देखता। या तो घर पहुँचते-पहुँचते टूट-फूटकर बराबर हो जाएँगे, या छोटे बच्चे जो मेले में नहीं आए हैं; जिद करके ले लेंगे और तोड़ डालेंगे। चिमटा कितने काम की चीज है। रोटियाँ तवे से उतार लो, चूल्हे में सेंक लो। कोई आग माँगने आए तो चटपट चूल्हे से आग निकालकर उसे दे दो। (पृष्ठ सं. 45-46)

शब्दार्थ—खयाल = विचार। फायदा = लाभ। चटपट = शीघ्र।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—उपर्युक्त गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'ईदगाह' शीर्षक कहानी से लिया गया है। इसकी रचना प्रसिद्ध कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द ने की है। हामिद को उसकी दादी ने तीन पैसे मेले के लिए दिए हैं। वह इनसे चिमटा खरीदता है क्योंकि उसे स्मरण है कि दादी के पास चिमटा नहीं है और तवे से रोटियाँ उतारते समय उसके हाथ जल जाते हैं। प्रेमचंद जी ने हामिद की इसी मनोदशा का वर्णन इन पंक्तियों में किया है।

व्याख्या—हामिद के साथ आये बच्चे खिलौने और मिठाइयाँ खरीदकर कुछ आगे बढ़ गए हैं जबकि हामिद लोहे के सामान वाली एक दुकान पर रुक जाता है जहाँ कई चिमटे रखे हुए हैं। उसे ध्यान आता है कि उसकी दादी के पास चिमटा नहीं है। जब वे तवे से रोटियाँ उतारती हैं तो हाथ जल जाता है। क्यों न वह दादी के लिए एक चिमटा खरीद ले। दादी चिमटा पाकर कितनी खुश हो जाएँगी, फिर कभी उनकी उँगलियाँ न जलेंगी और वे उसे ढेरों दुआएँ देंगी। घर में एक काम की चीज भी हो जाएगी। इन खिलौनों से भला क्या फायदा, बस थोड़ी देर की खुशी है, टूट-फूटकर बराबर हो जाएँगे और पैसे व्यर्थ में बरबाद हो जाएँगे। चिमटा काम की चीज है।

चिमटे की सहायता से तवे से रोटी उतारी जा सकती है, रोटी को चिमटे से पकड़कर चूल्हे की आग में सेंका जा सकता है। गाँव का कोई पड़ोसी अगर आग माँगने आये तो झटपट चिमटे से चूल्हे से आग निकाल कर उसे दी जा सकती है। यह सब सोचकर हामिद ने चिमटा ही खरीदने का निश्चय किया।

विशेष—1. हामिद के तर्क उसके विवेक एवं बुद्धि को व्यक्त करते हैं। 2. बाल मनोविज्ञान का चित्रण हुआ है। 3. भाषा उर्दू मिश्रित सरल, सुबोध खड़ी बोली है। शैली मनोविश्लेषणात्मक है।

11. हामिद – खिलौना क्यों नहीं है? अभी कंधे पर रखा, बंदूक हो गई। हाथ में ले लिया, फकीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ, तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने कितना ही जोर लगाएँ, वे मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है– चिमटा। (पृष्ठ सं. 47)

शब्दार्थ—बाल भी बाँका न कर पाना = मुहावरा, कुछ भी न बिगाड़ पाना।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित। 'ईदगाह' शीर्षक कहानी से लिया गया है। इसकी रचना प्रसिद्ध कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द ने की है। हामिद ने दादी अमीना के कष्ट का विचार करके तीन पैसे में चिमटा खरीद लिया। उसको बंदूक की तरह अपने कंधे पर रखकर वह दूसरे लड़कों के पास आया। मोहसिन ने हँसकर पूछा कि वह चिमटे का क्या करेगा। उसने चिमटा क्यों खरीदा? हामिद अपने चिमटे से संबंधित तर्क प्रस्तुत कर रहा है।

व्याख्या—महमूद के कथन को तर्कपूर्वक काटते हुए हामिद ने कहा कि चिमटा खिलौना क्यों नहीं है। इसको कंधे पर रखते ही यह बन्दूक बन जाता है। हाथ में लेने पर फकीरों का चिमटा बन जाता है। इच्छा हो तो इसको मंजीरे की तरह बजाया जा सकता है। उसका चिमटा मजबूत है। चिमटे की एक ही चोट से उनके सारे खिलौने टूट-फूट जायेंगे। सभी खिलौने पूरी ताक

लगाकर भी उसके चिमटे का मुकाबला नहीं कर सकते। वे उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। उसका चिमटा बहादुर है, वह शेर है।

विशेष—1. भाषा सरल, सुबोध और प्रवाहपूर्ण है। उर्दू शब्दों तथा मुहावरों का प्रयोग, उसके प्रभाव में वृद्धि करने वाला है। 2. शैली तर्क प्रधान तथा प्रतीकात्मक है। 3. हामिद सभी लड़कों को अपने तर्कों से निरुत्तर कर देता है। वह बुद्धिमान तथा समझदार है। 4. संवाद प्रभावशाली हैं।

12. उसके पास न्याय का बल है और नीति की शक्ति। एक ओर मिट्टी है, दूसरी ओर लोहा, जो इस वक्त अपने को फौलाद कह रहा है। वह अजेय है, घातक है। अगर कोई शेर आ जाए, तो मियाँ भिश्ती के छक्के छूट जाएँ, मियाँ सिपाही मिट्टी की बंदूक छोड़कर भागें, वकील साहब की नानी मर जाए, चोगे में मुँह छिपाकर जमीन पर लेट जाएँ। मगर यह चिमटा, यह बहादुर, यह रुस्तमे-हिंद लपककर शेर की गरदन पर सवार हो जाएगा और उसकी आँखें निकाल लेगा। (पृष्ठ सं. 47)

शब्दार्थ—फौलाद = स्टील, मजबूत। अजेय = जो हार न माने, जो जीता न जा सके। छक्के छूटना = घबरा जाना। रुस्तमे हिंद = बहादुर, भारत का सर्वश्रेष्ठ पहलवान होना।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित मुंशी प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'ईदगाह' से उद्धृत है। ईदगाह के मैदान पर मेला लगा था। बच्चों ने वहाँ खिलौने खरीदे परन्तु हामिद ने अपने पूरे तीन पैसों से एक चिमटा खरीदा। उसने अपने प्रबल तर्कों द्वारा चिमटे को खिलौनों से श्रेष्ठ तथा उपयोगी सिद्ध कर दिया।

व्याख्या—हामिद के पक्ष में न्याय और नीति की शक्ति थी। चिमटे की श्रेष्ठता प्रतिपादित करने के लिए वह जो तर्क दे रहा था वे न्याय और सत्य पर आधारित थे। अतः बालक उसके चिमटे को अपने खिलौनों से श्रेष्ठ स्वीकार करने को अन्ततः तैयार हो ही गए। और क्यों न होते, खिलौने तो मिट्टी के बने हैं जबकि हामिद का चिमटा मजबूत लोहे से बना है, जो इस समय फौलाद का सिद्ध हो रहा था। निश्चय ही वह चिमटा बच्चों के खिलौनों से श्रेष्ठ, अजेय और घातक भी था। हामिद ने तर्क दिया कि अगर कोई शेर आ जाए तो भिश्ती परास्त हो जायेगा, सिपाही मिट्टी की बंदूक छोड़कर भाग जाएगा और वकील साहब को नानी याद आने लगेगी, बेचारे अपने चोगे में मुँह छिपाते फिरेंगे किन्तु हामिद का चिमटा बहादुर पहलवान की तरह शेर की गर्दन पर सवार हो जाएगा और उसकी आँखें निकाल लेगा। निश्चय ही उसका चिमटा उसके साथियों के सभी खिलौनों से बेहतर था। क्योंकि ये खिलौने अन्ततः मिट्टी के बने थे। जो अंत में टूट-फूट जाएँगे जबकि चिमटा लोहे का बना था जो कभी नष्ट नहीं होगा। चिमटे की इस महिमा ने सभी खिलौनों को और उनके मालिकों (बच्चों) को परास्त कर दिया।

विशेष—1. बाल मनोविज्ञान का सुन्दर चित्रण इस अवतरण में प्रेमचंद ने किया है। 2. हामिद के तर्क इतने सटीक एवं जोरदार थे कि बच्चे परास्त होकर उसके चिमटे की श्रेष्ठता को मानने के लिए विवश हो गए। 3. भाषा मुहावरेदार है यथा—छक्के छूटना, नानी याद आना, गर्दन पर सवार होना आदि। 4. प्रेमचंद ने इस अवतरण में विवरणात्मक शैली का प्रयोग किया है।

13. बात कुछ बनी नहीं। खासी गाली-गलौज थी; कानून को पेट में डालने वाली बात छा गई। ऐसी छा गई कि तीनों सूरमा मुँह ताकते रह गए, मानो कोई धेलचा कनकौआ किसी गंडेवाले कनकौए को काट गया हो। कानून मुँह से बाहर निकालने वाली चीज है। उसको पेट के अंदर डाल दिया जाना, बेतुकी-सी बात होने पर भी कुछ नयापन रखती है। हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रुस्तमे-हिंद है। अब इसमें मोहसिन, महमूद, नूरे, सम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती। (पृष्ठ सं. 48)

शब्दार्थ—सूरमा = योद्धा, वीर। धेलचा कनकौआ = धेला (दो पैसे) वाली सस्ती पतंग। गंडा = चार आना, कीमती। मैदान मार लेना = बाजी जीत लेना।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'ईदगाह' नामक कहानी से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द हैं। हामिद और अन्य लड़कों में बहस हो रही थी। हामिद अपने चिमटे की तारीफ कर रहा था तो अन्य लड़के अपने-अपने खिलौनों की। महमूद ने कहा कि वकील साहब तो मेजकुर्सी पर बैठेंगे परन्तु

चिमटा बावर्ची खाने में ही पड़ा रहेगा। यह तर्क दमदार था। हामिद को इसकी कोई काट नहीं सूझी तो उसने कुतर्क से काम लेना शुरू कर दिया। उसने कहा कि चिमटा वकील साहब को कुर्सी से उठाकर जमीन पर गिरा देगा और उनके कानून को उनके पेट में डाल देगा।

व्याख्या—लेखक कहता है कि कहने को तो हामिद ने कह दिया परन्तु उसकी बात प्रभावशाली नहीं थी। उसका तर्क एक प्रकार की गाली जैसा ही था परन्तु कानून को पेट में डालने की बात का प्रभाव हुआ। वह अकाट्य बात थी। बहस में लगे मोहसिन, महमूद और नूरे कोई उत्तर नहीं दे पा रहे थे। वे तर्क से विमुख और चुप थे। जिस प्रकार कोई धेलचा कनकौआ अर्थात् दो पैसे की कम कीमत वाली पतंग किसी गंडेवाल कनकौए अर्थात् चार आने या चौथाई रुपये वाली कीमती पतंग को काट दे उसी प्रकार हामिद के स्तरहीन तर्क ने अन्य लड़कों के सभी प्रभावशाली तर्कों को प्रभावहीन कर दिया था। कानून की बात मुँह से कही जाती है। उसको पेट के अन्दर डालना केवल कुतर्क है परन्तु उसमें नवीनता है। हामिद के इस तर्क ने सबको परास्त कर दिया। सब ने मान लिया कि हामिद का चिमटा भारत के इनामी, प्रसिद्ध पहलवान के समान था। अब उसकी श्रेष्ठता को स्वीकार करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं थी।

विशेष—1. प्रेमचन्द ने बालकों के मनोभावों का सुन्दर चित्रण किया है। 2. बच्चे जब बहस करते हैं तो अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिए कुतर्क का भी सहारा लेते हैं। 3. कानून को पेट में डालने के कुतर्क ने सभी विरोधी बच्चों को निरुत्तर कर दिया। 4. भाषा सरल और प्रभावशाली है। उसमें उर्दू के, लोकभाषा के तथा तत्सम शब्द हैं। शैली विवरणात्मक है।

14. बुढ़िया का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया, और स्नेह भी वह नहीं, जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसक शब्दों में बिखेर देता है! यह मूक स्नेह था, खूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौने लेते और खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा। इतना जब्त इससे हुआ कैसे? वहाँ भी उसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गदगद हो गया। (पृष्ठ सं. 50)

शब्दार्थ—स्नेह = प्रेम। प्रगल्भ = वाक्पटु। मूक = शब्दहीन, चुप। गदगद = प्रसन्न।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्य-पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित कहानी 'ईदगाह' से ली गई हैं। मेले से हामिद घर लौटा। अमीना ने उसे गोद में उठा लिया। जब चिमटा उसके हाथ में देखा तो पूछा कि यह कहाँ से लिया? हामिद ने बताया कि उसने तीन पैसे में मोल लिया है। बुढ़िया पहले तो नाराज हुई किन्तु जब हामिद ने अपराधी भाव से कहा कि तुम्हारी अँगुलियाँ तवे से जल जाती थीं इसलिए मैंने चिमटा लिया तो बुढ़िया का क्रोध स्नेह में बदल गया।

व्याख्या—बुढ़िया अमीना पहले तो इस बात पर नाराज हुई कि पैसे उसने हामिद को मिठाई, खिलौनों के लिए दिए थे, वह चिमटा क्यों लाया? हामिद ने यह कहा कि तवे से उसकी दादी की उँगलियाँ जल जाती थीं इसलिए उसने चिमटा खरीदा। यह जानकर बुढ़िया का क्रोध स्नेह, वात्सल्य और ममता में बदल गया। इस स्नेह को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता था, केवल हृदय में अनुभव किया जा सकता था। उसका हृदय प्रेम के रस एवं स्वाद से भरा हुआ था कि उसका पोता उससे कितना स्नेह करता था। मेले में भी उसे दादी का ध्यान रहा। हामिद में कितना त्याग, कितना सद्भाव एवं कितना विवेक है। दूसरे बच्चे जब मिठाई और खिलौने खरीद रहे होंगे, तब उसका मन कितना ललचाया होगा? पर उसने अपने मन पर काबू कर लिया और मिठाई या खिलौने न खरीदकर पूरे तीन पैसों से यह चिमटा खरीदा। निश्चय ही वह अपनी दादी से स्नेह करता था। यह भावना बुढ़िया अमीना के हृदय को गदगद कर रही थी और उसकी आँखों से खुशी के आँसू निकल रहे थे।

विशेष—1. हामिद ने दादी को बता दिया कि उसकी उँगलियाँ तवे से जलती थीं, इसलिए चिमटा लिया। अपने प्रति हामिद का स्नेह देखकर बुढ़िया अमीना गदगद हो गई। 2. जब हृदय भावों से भरा होता है तो वाणी मूक हो जाती है। 3. भाषा में सरलता, सहजता है। 4. वर्णन में मनोवैचारिकता का समावेश है।

15. और अब एक बड़ी विचित्र बात हुई। हामिद के इस चिमटे से भी विचित्र! बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थीं। हामिद इसका रहस्य क्या समझता। (पृष्ठ सं. 51)

शब्दार्थ—विचित्र = अनोखा। पार्ट खेला = अभिनय किया। दामन = आँचल, पल्लू। दुआएँ = आशीर्वाद। रहस्य = भेद।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'ईदगाह' शीर्षक कहानी का अन्तिम अनुच्छेद है। इसके लेखक प्रसिद्ध कहानीकार मुंशी प्रेमचंद हैं। दादी अमीना को रोटी बनाते समय तवे से जलने से बचाने के लिए उसके पौत्र हामिद ने अपने पूरे तीन पैसे में एक चिमटा खरीदा। वह दोपहर तक भूखा-प्यासा रहा और कोई खिलौना भी नहीं खरीदा। हामिद के इस गहरे प्रेम से अमीना अभिभूत हो उठी।

व्याख्या—लेखक कहते हैं कि हामिद के अपने प्रति गहरे प्रेम को देखकर दादी अमीना बच्चों की तरह रोने लगी। वह वृद्धा थी और समझदार भी परन्तु बच्चों की तरह रोना एक विचित्र बात थी। हामिद बच्चा था। उसको घर-गृहस्थी का ज्ञान नहीं था। उसका चिमटा खरीदना एक अनोखी बात थी। उसका खिलौनों और मिठाई से मुँह फेरकर चिमटा खरीदना किसी बूढ़े आदमी के आचरण जैसा था। दूसरी ओर वृद्धा अमीना का व्यवहार किसी बच्ची के समान होने के कारण विचित्र था। बालक हामिद ने वृद्ध व्यक्ति का उत्तरदायित्वपूर्ण आचरण किया था तो वृद्धा अमीना ने बच्चों जैसा भावुकतापूर्ण व्यवहार किया था। ये दोनों ही व्यवहार अनोखे तथा असामान्य थे। अमीना रो रही थी और आँचल फैलाकर हामिद को आशीर्वाद दे रही थी। उसकी आँखों से आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें टपक रही थीं। दादी अमीना के इस व्यवहार के पीछे छिपे भाव को समझना हामिद के बस की बात नहीं थी।

विशेष—1. भाषा सरल तथा प्रभावपूर्ण है। इसमें तत्सम शब्दों के साथ-साथ उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं। 2. शैली मनोविश्लेषणात्मक और चित्रात्मक है। 3. लेखक ने हामिद तथा अमीना के व्यवहार को उनकी आयु के व्यवहार के प्रतिकूल माना है। अतः वह विचित्र कहा गया है। 4. हामिद तथा अमीना दोनों का व्यवहार भावुकता से प्रभावित है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 5. महमूद ने कौन-सा खिलौना खरीदा?

उत्तर–महमूद ने सिपाही खरीदा। उसकी वर्दी खाकी रंग की थी तथा पगड़ी लाल रंग की थी। कंधे पर बन्दूक रखे हुए वह ऐसा लग रहा था जैसे कवायद किए चला आ रहा हो।

प्रश्न 6. ईद किस महीने में आती है?

उत्तर–ईद रमजान के महीने में तीस रोजे बीत जाने के बाद आती है।

प्रश्न 7. 'ईदगाह' किस लेखक की रचना है?

उत्तर–ईदगाह हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द की रचना है। यह उनकी एक प्रसिद्ध कहानी है।

प्रश्न 8. हामिद के चरित्र की कोई तीन विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–हामिद के चरित्र की तीन विशेषताएँ–

1. आशावान हामिद आशा की भावना से भरा है। इसके बल पर वह सभी कठिनाइयों से लड़ सकता है।
2. हामिद संवेदनशील है। वह बातों को गहराई से समझता है।
3. कम उम्र में ही उसमें उत्तरदायित्व की भावना आ गई है।

प्रश्न 9. हामिद ने चिमटे की उपयोगिता को सिद्ध करते हुए क्या-क्या तर्क दिए?

उत्तर–हामिद ने अपने साथी बच्चों के सामने अपने चिमटे की उपयोगिता सिद्ध करते हुए कहा–

1. चिमटा खिलौना है। बन्दूक तथा फकीर के चिमटे की तरह उसका प्रयोग हो सकता है।
2. जमीन पर गिरने पर टूटेगा नहीं, जबकि मिट्टी के खिलौने टूट जायेंगे।
3. उसका चिमटा बहादुर है, शेर है। वह आग, पानी, तूफान में डटा रहता है।

प्रश्न 10. 'ईदगाह' कहानी के उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए, जिनसे ईद के अवसर पर ग्रामीण परिवेश का उल्लास प्रकट होता है।

उत्तर–ईद आ गई है। प्रकृति अत्यन्त सुन्दर प्रतीत हो रही है। गाँव में हलचल है। लोग ईदगाह जाने की तैयारी में लगे हैं। कोई कुर्ते के बटन लगाने के लिए पड़ोस से सुई-धागा लेने तो कोई अपने कड़े हो गए जूते को मुलायम करने के लिए तेली के घर से तेल लेने जा रहा है। बैलों को सानी-पानी दी जा रही है। बच्चे ईदगाह जाने की जल्दी में हैं। सेवइयाँ पकाने के लिए दूध-शक्कर का प्रबन्ध हो रहा है।

प्रश्न 11. हामिद के अतिरिक्त इस कहानी के किस पात्र ने आपको सर्वाधिक प्रभावित किया है और क्यों?

उत्तर–हामिद के अतिरिक्त हमको सर्वाधिक प्रभावित करने वाला पात्र है अमीना। वह हामिद की बूढ़ी दादी हैं। हामिद के माता-पिता नहीं हैं। वही हामिद को पाल रही है। स्नेहमयी है। वह गरीब है। उसे त्योहार मनाने की चिन्ता है। इतनी उम्र होने पर भी वह घर का काम करती है, खाना बनाती है तथा सिलाई करके घर-गृहस्थी का खर्च चलाती है।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 12. बच्चों में लालच तथा एक दूसरे से आगे निकल जाने की होड़ के साथ-साथ निश्छलता भी मौजूद होती है। कहानी से कोई दो प्रसंग चुनकर इस मत की पुष्टि कीजिए।

उत्तर–बच्चों में लालच, एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ के साथ, निश्छलता के गुण भी विद्यमान होते हैं। कहानी 'ईदगाह' के निम्नलिखित दो प्रसंग इसकी पुष्टि करते हैं–

प्रसंग एक–मेले में बच्चे खिलौने तथा मिठाई खरीदते हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं। खिलौने खरीदने में असमर्थ हामिद उनको पाने के लिए ललचाता है। बच्चे उसे अपने खिलौने तथा मिठाई नहीं देते। तब हामिद ऊपरी मन से इन चीजों की

बुराई करता है। वह तर्क देकर चिमटे को खिलौना, शेर, बहादुर, रुस्तमे-हिंद तथा सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध करता है। वह अपनी खरीद को श्रेष्ठ बताकर आगे निकलने की होड़ में अन्य बच्चों से पीछे रहना नहीं चाहता।

प्रसंग दो–हामिद के माता-पिता इस दुनिया में नहीं हैं। उसे समझाया गया है कि उसके पिता बहुत सारा पैसा कमाने गए हैं तथा माँ खुदा के यहाँ से अच्छी-अच्छी चीजें लेने गई है। वे जल्दी लौटेंगे। हामिद कोई प्रतिवाद नहीं करता और इस बात को मान लेता है। इससे उसकी निश्छलता सिद्ध होती है।

प्रश्न 13. मुंशी प्रेमचंद का जीवन-परिचय लिखिए।

उत्तर–संकेत–मुंशी प्रेमचंद का जीवन-परिचय इस पाठ के अंत में 'जीवन-परिचय' शीर्षक के अन्तर्गत दिया गया है।

प्रश्न 14. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है ..... ईद की बधाई दे रहा है।

(ख) कितना अपूर्व दृश्य था ..... एक लड़ी में पिरोए हुए हैं।

उत्तर–उपर्युक्त पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या के लिए व्याख्या भाग में गद्यांश 1 व 7 का अवलोकन कीजिए।